Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date:- 23-9-20
To- Next-class

Models of Psychology
Psychopathologies of Everyday Life

दैनिक जीवन में मनोविकृतियों के प्रमुख प्रकार (Some Important types of Psychopathologies of Everyday life)

फ्रायड (Freud) ने अनेकों तरह की मनोविकृतियां (Psychopathologies) का वर्णन किया है जिनमें निम्नांकित प्रमुख है।

(1) बोलने की भूलें (Slip of Tongue):- प्रायः ~~देखा गया~~ देखा गया है कि दैनिक जीवन में व्यक्ति से बोलने की भूलें हो जाया करती है, वह बोलना कुछ और चाहता है और बोल कुछ और ही देता है। ऐसी गलतियों पर स्वयं व्यक्ति को भी आश्चर्य होता है। ऐसी गलतीयों का जन्म का स्रोत अचेतन होता है। मेरिंगर तथा मेयर (Meringer & Mayer, 1948) ने बोलने में हुए इस तरह के भूल के कारण शब्दों की ध्वनियों में समानता बतलाया है। लेकिन फ्रायड (Freud) ने इसका जोरदार खंडन किया है और कहा है कि इसका कारण अचेतन में दमित इच्छाएं होती है जो इस तरह के भूल के रूप में चेतन में व्यक्त होकर अपना आंशिक संतुष्ट कर लेती है। बोलने की भूलें के बहुत से उदाहरण हमें दैनिक जीवन में मिलते हैं। बोलने की भूल (Slip of Tongue) का एक अच्छा उदाहरण फ्रायड

Scanned with CamScanner

(Brown, 1969, P. 233-234) ने दिया। ब्राउन के एक मित्र को अपने ऊपर काफी गर्व था तथा अपने ज्ञान भंडार को अन्य व्यक्तियों के ज्ञान भंडार से काफी बड़ा समझता था। एक बार उसे सभा में अपने मित्र के एक लेख पर कार्यवाई देनी थी। उसे कहना था "क्या मैं इस महान लेख पर अपना साधारण विचार प्रकट कर सकता हूँ" ("may I offer a few modest Remarks on this very brilliant paper") परन्तु उसने कहा "इस निम्न कोटि के लेख पर क्या मैं अपना महान विचार प्रकट कर सकता हूँ" (May I offer a few brilliant Remarks on this very modest paper)। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि उस व्यक्ति के अचेतन मन में इस लेख के प्रति महानता का नहीं बल्कि निम्नता का विचार था। इसी तरह के अनेक उदाहरण हम अपने दैनिक जीवन में भी दे सकते हैं जिसमें इस तरह की बोलने की भूल हुआ करती है। इसी तरह फ्रायड ने एक उदाहरण देते हुए कहा है कि एक बार एक ऐसी रोगनी के लिए दवा लिखवा जा रहा था जो सचमुच में इलाज के खर्च से काफी परेशान थी। रोगनी अचानक बोल उठी "हमें इतना भी बिल (bills) न देना जिसे मैं निगल ही न पाऊँ।" उसका यहाँ स्पष्टतः बिल से तात्पर्य (Pills) से था। स्पष्ट है कि बोलने की भूल अचेतन द्वारा प्रेरित होती है।

Next class

Scanned with CamScanner